प्रश्न-पेपर 46

'उपदेश- रहस्य' गा. १ थी 55

ता.

मार्क्स 50

प्र. १ नीचेना भाववाली गाथानो अर्थमात्र लखो । गमे ते 5 — १० मार्क्स

(1) शुध्ध उपयोगनी प्राप्ति (२) ऋजुचारीना लक्षणो

(3) सम्यग्दृष्टिना लिंगो (4) साधु महात्माओने कायोत्सर्गनुं विधान

(5) मार्गमां प्रवृत्ति नुं कारण (6) मोक्षने कर्मनो विभागदर्शक

प्र. २ नीचेना पदवाली मुलमात्र गाथा लखो । गमे ते '5' — १० मार्क्स

(1) तच्चंगं (53) (२) समाही (45) (3) भगवओ (36)

(4) तिगुत्तो (25) (5) णिबद्धा (14) (6) हंदि (8)

प्र. 3 नीचेना प्रश्नोना जवाब आपो । गमे ते १० — 30 मार्क्स

(1) केवा भव्य जीवो माटे आ ग्रन्थ रचेल छे ? ते जणावी मनुष्य भवनी पूर्वे जीवनी दशा केवी हती ? [गाथा.2)

(२) 3 प्रकारनी अहिंसा समजावी, गुरुकुलवास तथा सूत्राभ्यास नी शुं आवश्यकता ? (गा.5)

(3) ज्ञानकृत दुःखक्षय तथा क्रियाकृत दुःखक्षय केवा प्रकारना छे ते स्पष्ट समझावो ? (गा.7)

(4) एकाकी विहार नी चर्या समझावो (दोष परंपरा साथे)

(5) अजातकल्प समजावी गीतार्थने पण एकाकी विहार क्यारे करवो ते लखो ? [गाथा.13)

(6) द्रव्यशब्दना अर्थ लखी अप्रधान द्रव्याज्ञा कोने कोने होय ते जणावो ? [18]

(7) सम्यक्त्वीने धर्मश्रवणनी इच्छा तथा धर्मना पालननी इच्छा केवा प्रकारनी होय छे [23] ते जणावी प्रत्याख्यानना कुल भांगा केटला ?

(8) द्रव्यस्तव सत्पुरूषोने संमत केवी रीते छे ? ते जणावी 'योग्यप्रज्ञाप्य' विशेषण शा माटे ? [29]

(9) आरम्भ थी प्रवर्तता द्रव्यस्तवमां आरम्भ नी अनुमति मानीए तो शुं दोष ? [30]

(10) नदी उतारण महात्माओने क्यारे घटे ? [32] ते जणावी कुपदृष्टान्त नी घटना करो (33)

(11) द्रव्य- भावनी चतुर्भंगी समजावी फलदायी भांगा समजावो ।

(12) भाग्य अने पुरूषार्थवादनी चर्चा तथा फल समजावो ।

कुल 50 मार्क्स

प्र. १

(1) [6] (2) [10]

(3) [23] (4) [29]

(5) [41] (6) [51]

प्र. २

(1) [53] (2) [45] (3) [36]

(4) [25] (5) [14] (6) [8]

प्र. 3

(1) (गा- १) (गा- २

(2) (गा - 4)

(3) (गा. 7)

(4)

(5) (गा. 13)

(6) (गा. 17) (गा. 18)

(7) (गा. २3)

(8) (गा. २9)

(9) (गा. 30)

(10) (गा. ३२) (गा. 33)